www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-2* *Issue-10* *October 2025***

गाँधी के स्वाधीनता आन्दोलन में काँग्रेस की भूमिका

डॉ० सन्नी कुमार

पी–एच०डी०, राजनीति विज्ञान विभाग, बी0एन0एम0यू0, मधेपुरा

सारांश–

राष्ट्रवाद के इतिहास में प्रायः एक अकेले व्यक्ति को राष्ट्र–निर्माण के साथ जोड़कर देखा जाता है। उदाहरण के लिए, हम इटली के निर्माण के साथ गैरीबाल्डी को, अमेरिकी स्वतंत्रता युद्ध के साथ जॉर्ज वाशिंगटन को और वियतनाम को औपनिवेशिक शासन से मुक्त कराने के संघर्ष से हो ची मिन्ह को जोड़कर देखते हैं। इसी तरह महात्मा गाँधी को भारतीय राष्ट्र का 'पिता' माना गया है। चूँकि गाँधी जी स्वतंत्रता संघर्ष में भाग लेने वाले सभी नेताओं में सर्वाधिक प्रभावशाली और सम्मानित हैं अतः उन्हें दिया गया उपर्युक्त विशेषण गलत नहीं है। हालाँकि, वाशिंगटन अथवा हो ची मिन्ह की तरह महात्मा गाँधी का राजनीतिक जीवन–वृत्त उस समाज ने ही सँवारा और नियंत्रित किया, जिस समाज में वे रहते थे। कोई व्यक्ति चाहे कितना ही महान क्यों न हो वह न केवल इतिहास बनाता है बल्कि स्वयं भी इतिहास द्वारा बनाया जाता है।

कुँजी– राष्ट्रवाद, स्वतंत्रता, राजनीतिक, समाज।

प्रस्तावना

इस अध्याय में 1915–1948 के महत्त्वपूर्ण काल के दौरान भारत में गाँधी जी की गतिविधियों का विश्लेषण किया गया है। यह भारतीय समाज के विभिन्न हिस्सों के साथ उनके संपर्कों और उनके द्वारा प्रेरित तथा नेतृत्व किए गए लोकप्रिय संघर्षों की छान–बीन करता है। यह अध्याय विद्यार्थी के समक्ष उन अलग–अलग प्रकार के स्रोतों को भी रखता है जिनका इस्तेमाल, इतिहासकार एक नेता के जीवन–वृत्त तथा वह जिन सामाजिक आंदोलनों से जुड़ा रहा है, के पुनर्निर्माण में करते हैं।

1917 का अधिकांश समय महात्मा गाँधी को किसानों के लिए काश्तकारी की सुरक्षा के साथ–साथ अपनी पसंद की फ़सल उपजाने की आज़ादी दिलाने में बीता। अगले वर्ष यानी 1918 में गाँधी जी गुजरात के अपने गृह राज्य में दो अभियानों में संलग्न रहे। सबसे पहले उन्होंने अहमदाबाद के एक श्रम विवाद में हस्तक्षेप कर कपड़े की मिलों में काम करने वालों के लिए काम करने की बेहतर स्थितियों की माँग की। इसके बाद उन्होंने खेड़ा में फ़सल चौपट होने पर राज्य से किसानों का लगान माफ़ करने की माँग की। चंपारण, अहमदाबाद और खेड़ा में की गई पहल से गाँधी जी एक ऐसे राष्ट्रवादी के रूप में उभरे जिनमें गरीबों के लिए गहरी सहानुभूति थी। इसी तरह ये सभी स्थानिक संघर्ष थे। इसके बाद 1919 में औपनिवेशिक शासकों ने गाँधी जी की झोली में एक ऐसा मुद्दा डाल दिया जिससे वे कहीं अधिक विस्तृत आंदोलन खड़ा कर सकते थे। 1914–18 के महान युद्ध के दौरान अंग्रेज़ों ने प्रेस पर प्रतिबंध लगा दिया था और बिना जाँच के कारावास की अनुमति दे दी थी। अब सर सिडनी रॉलेट की अध्यक्षता वाली एक समिति की संस्तुतियों के आधार पर इन कठोर उपायों को जारी रखा गया। इसके जवाब में गाँधी जी ने देशभर में 'रॉलेट एक्ट' के खिलाफ एक अभियान चलाया। उत्तरी और पश्चिमी भारत के कस्बों में चारों तरफ बंद के समर्थन में दुकानों और स्कूलों के बंद होने के कारण जीवन लगभग ठहर सा गया था। पंजाब में, विशेष रूप से कड़ा विरोध हुआ, जहाँ के बहुत से लोगों ने युद्ध में अंग्रेज़ों के पक्ष में सेवा की थी और अब अपनी सेवा के बदले वे ईनाम की अपेक्षा कर रहे थे। लेकिन इसकी जगह उन्हें रॉलेट एक्ट दिया गया। पंजाब जाते समय गाँधी जी को क़ैद कर लिया गया। स्थानीय कांग्रेसजनों को गिरफ्तार कर लिया गया था। प्रांत की यह स्थिति धीरे–धीरे और तनावपूर्ण हो गई तथा अप्रैल 1919 में अमृतसर में यह खूनखराबे के चरमोत्कर्ष पर ही पहुँच गई। जब एक अंग्रेज़ ब्रिगेडियर ने एक राष्ट्रवादी सभा पर गोली चलाने का हुक्म दिया तब जलियाँवाला बाग हत्याकांड के नाम से जाने गए इस हत्याकांड में चार सौ से अधिक लोग मारे गए।

रॉलेट सत्याग्रह से ही गाँधी जी एक सच्चे राष्ट्रीय नेता बन गए। इसकी सफलता से उत्साहित होकर गाँधी जी ने

अंग्रेज़ी शासन के खिलाफ 'असहयोग' अभियान की माँग कर दी। जो भारतीय उपनिवेशवाद का खात्मा करना चाहते थे उनसे आग्रह किया गया कि वे स्कूलों, कॉलेजों और न्यायालय न जाएँ तथा कर न चुकाएँ। संक्षेप में सभी को अंग्रेज़ी सरकार के साथ (सभी) ऐच्छिक संबंधों के परित्याग का पालन करने को कहा गया। गाँधी जी ने कहा कि यदि असहयोग का ठीक ढंग से पालन किया जाए तो भारत एक वर्ष के भीतर स्वराज प्राप्त कर लेगा। अपने संघर्ष का और विस्तार करते हुए उन्होंने खिलाफ़त आंदोलन के साथ हाथ मिला लिए जो हाल ही में तुर्की शासक कमाल अतातुर्क द्वारा समाप्त किए गए सर्व–इस्लामवाद के प्रतीक खलीफा की पुनर्स्थापना की माँग कर रहा था।

सन् 1885 मे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का जन्म हुआ। कांग्रेस की स्थापना एक सेवानिवृत्त अंग्रेज ए ओ ह्यूम अधिकारी ने कि थी। बम्बई की गोकुलदास तेजपाल संस्कृत पाठशाला में 28 दिसम्बर 1885 को कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन हुआ था। इस अधिवेशन की अध्यक्षता उमेशचंद्र बैनर्जी ने की। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के जन्म (उदय) पर पट्टभिसीता रमैय्या ने लिखा हैं "यह एक रहस्य ही हैं कि किसके मन में पहले अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना का विचार आया।" व्योमेश चन्द्र बनर्जी ने यह तथ्य सामने रखा कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना का विचार वायसराय लार्ड डफरिन के मस्तिष्क की उपज था। डफरिन ने ए. ओ. ह्यूम को इसकी स्थापना हेतु प्रेरित किया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना करने वाले संस्थापक 1. ए ओ ह्यूम 2. दादा भाई नौरोजी एवं 3. दिनशा वाचा थे। कांग्रेस का उद्देश्य बिना किसी भेदभाव के भारतवासियों का प्रतिनिधित्व करना था। इसका राष्ट्रीय स्वरूप इसी से परिलक्षित होता है कि इसके प्रथम अध्यक्ष व्योमेशचन्द्र बनर्जी भारतीय ईसाई थे। दूसरे दादाभाई नौरोजी पारसी थे, तीसरे बदरुद्दीन तैयबजी मुसलमान थे, जॉर्ज यूल चौथे अध्यक्ष अंग्रेज थे। 1885 मे कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन मे केवल 72 प्रतिनिधि सम्मिलित हुए थे, लेकिन समय और परिस्थितियों के अनुकूल होने तथा भारतीय जनता के बढ़ते हुए राष्ट्रीय उत्साह के कारण राष्ट्रीय कांग्रेस की संख्या मे तेजी से और निरन्तर वृद्धि होती गई। दूसरे, तीसरे और चौथे अधिवेशन मे क्रमशः 436, 607, तथा 1248 प्रतिनिधियों ने भाग लिया और शनैः शनैः इसने अखिल भारतीय संस्था का रूप धारण कर लिया।

19वीं सदी के अंत से, और विशेष रूप से 1920 के बाद, महात्मा गांधी के नेतृत्व में, कांग्रेस भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की प्रमुख नेता बन गई। (14) कांग्रेस ने यूनाइटेड किंगडम से भारत को स्वतंत्रता दिलाने में मदद की, (सी)(15)(ड) (16) और ब्रिटिश साम्राज्य में अन्य विरोधी उपनिवेशवादी राष्ट्रीयता आंदोलनों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला।

गरमपंथी विचारधारा का उद्भवः चूंकि 1885ई. से 1905ई. तक भारत तथा विदेशों में कुछ ऐसी घटनाएं घटित हुई जिससे भारतीय समाज के युवा वर्ग में कांग्रेस के संवैधानिक साधनों के प्रयोग की नीति में अविश्वास ने जन्म ले लिया। इस युवा वर्ग का मानना था कि स्वराज्य कोई भीख की वस्तु नहीं है। इसके लिए कठोर संघर्ष की नीति अपनाने की आवश्यकता है। इसके लिए उग्र राष्ट्रवादियों ने आत्म–बलिदान का आहवान किया। इस समय भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में लाल–बाल–पाल की विचारधारा का जन्म हुआ। इस विचारधारा के प्रमुख नेता लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक तथा विपिनचन्द्र पाल थे। इस समय तिलक ने कहा कि स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर ही रहूंगा। इसका भारतीय युवा वर्ग पर अत्याधिक प्रभाव पड़ा और स्वराज्य प्राप्ति के लिए कठोर संघर्ष की बात ने एक नई विचारधारा को जन्म दिया। अंततः 1906 से 1919ई. तक भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की बागडोर गरमपंथी विचारधारा वाले नेताओं के हाथ में रही।

इस विचारधारा का उद्भव कोई आकस्मिक घटना नहीं थी, बल्कि बीस वर्षों तक कांग्रेस की नीतियों का परिणाम थी। कांग्रेस के नरमपंथी नेताओं द्वारा अंग्रेजों की न्यायप्रियता और क्रमिक सुधारों की बात ने युवा वर्ग को यह बात सोचने पर विवश कर दिया कि ब्रिटिश सरकार द्वारा निरन्तर भारतीय हितों की जो अनदेखी की गई, उसमें नरमपंथी नेताओं का भी योगदान रहा। जब 1892ई. में ब्रिटिश सरकार ने भारतीय परिषद अधिनियम पास किया तो इससे कांग्रेस के युवा नेता संतुष्ट नहीं थे। अब युवा वर्ग को यह विश्वास हो गया था कि प्रार्थना पत्र देने से और प्रतिनिधि मण्डल भेजकर काग्रेस को कुछ हासिल होने वाला नहीं था। लाला लाजपतराय ने तो यहां तक कहा कि अब भारतीयों को ब्रिटिश सरकार की कृपा पर निर्भर न रहकर कुछ निर्णायक कदम उठाने चाहिए।

इस समय ब्रिटिश सरकार की नीतियां आर्थिक दृष्टि से भी भारतीय उद्योगों को बर्बाद करने वाली थी। दादा भाई नैरोजी के 'आर्थिक निष्कासन के सिद्धान्त' ने स्पष्ट कर दिया कि ब्रिटिश सरकार व्यापार के द्वारा भारतीयों का आर्थिक शोषण कर रही थी और प्रत्येक वर्ष अपार धनराशि ब्रिटेन जा रही थी। ब्रिटिश सरकार ने भारत में निर्मित सामान पर अधिक उत्पादन कर लगाकर भारतीय वस्तुओं को महंगा कर दिया और विदेशी वस्तुएं भारत में सस्ते दामों पर मिलने लग गई।

19वीं सदी में भारत में कई समाज सुधार आन्दोलनों का जन्म हुआ और इससे भारतीय पुनर्जागरण में मदद मिली। इन समाज सुधार आन्दोलनों द्वारा भारतीय सभ्यता और संस्कृति के गौरवपूर्ण अतीत का आभास करवाया गया और भारत के समाज सुधारकों ने राष्ट्रीय चेतना पैदा करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। अरविन्द घोष ने आध्यात्मिक राष्ट्रवाद तथा स्वामी दयानन्द सरस्वती ने स्वराज्य शब्द का प्रयोग करके भारतीयों में नया जोश भर दिया। बाल गंगाधर तिलक ने

गणपति तथा शिवाजी उत्सवों का प्रारम्भ करके भारतीयों को गौरवशाली अतीत से परिचय करवाया।

इस समय भारत में बंकिमचन्द्र चटर्जी की पुस्तक 'आनन्दमठ' का युवा वर्ग पर काफी प्रभाव पड़ा और उनके द्वारा रचित प्रमुख गीत 'वन्देमातरम्' राष्ट्रीय गान बन गया। केसरी, युगान्तर तथा सन्ध्या जैसे प्रमुख समाचारपत्रों ने ब्रिटिश सरकार की साम्राज्यवादी नीतियों तथा अमानुषिक अत्याचारों की कठोर आलोचना की। इससे भारतीय जनमानस में देशप्रेम की भावना पैदा हुई जो कांग्रेस की उदारवादी विचारधारा की आलोचना का कारण भी बनी। इस समय भारत में 1896–97 ई. का भीषण अकाल पड़ा तो ब्रिटिश सरकार ने भारतीयों की मदद करने की बजाय दिल्ली में एक शानदार दरबार का आयोजन किया। पूना में जब भयंकर प्लेग फैला तो ब्रिटिश सरकार ने इस स्थिति को अविवेकपूर्ण ढंग से हल करने का प्रयास किया।' इससे भारतीयों में सरकार विरोधी भावनाऐं पैदा हुई और उग्र राष्ट्रवाद का विकास हुआ। इस समय ब्रिटिश उपनिवेशों में रहने वाले भारतीयों के प्रति ब्रिटिश लोगों का व्यवहार बहुत ही असभ्य और अन्यायपूर्ण था। दक्षिण अफ्रीका में रह रहे भारतीयों के साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता था और उन्हें प्रथम श्रेणी के डिब्बों में सफर करने की अनुमति नहीं थी। इससे शिक्षित भारतीय युवा वर्ग में ब्रिटिश सरकार के प्रति असंतोष की भावना पैदा की और गरमपंथी विचारधारा को बल मिला।

चंपारण किसान आंदोलन देश की आजादी के संघर्ष का मजबूत प्रतीक बन गया था. और इस पूरे आंदोलन के पीछे एक पतला–दुबला किसान था, जिसकी जिद ने गांधी जी को चंपारण आने के लिए मजबूर कर दिया था. हालांकि राजकुमार शुक्ल को भारत के राजनीतिक इतिहास में वह जगह नहीं मिल सकी जो मिलनी चाहिए थी।

हजारों भूमिहीन मजदूर एवं गरीब किसान खाद्यान्न के बजाय नील और अन्य नकदी फसलों की खेती करने के लिये बाध्य हो गये थे। वहाँ पर नील की खेती करने वाले किसानों पर बहुत अत्याचार हो रहा था। अंग्रेजों की ओर से खूब शोषण हो रहा था। ऊपर से कुछ बगान मालिक भी जुल्म ढा रहे थे। महात्मा गाँधी ने अप्रैल 1917 में गणेशशंकर विद्यार्थी के कहने पर राजकुमार शुक्ल के निमंत्रण पर बिहार के चम्पारण के नील कृषकों की स्थिति का जायजा लेने वहाँ पहुँचे। उनके दर्शन के लिए हजारों लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। किसानों ने अपनी सारी समस्याएँ बताईं। उधर पुलिस भी हरकत में आ गई। पुलिस सुपरिटेंडेंट ने गांधीजी को जिला छोड़ने का आदेश दिया। गांधीजी ने आदेश मानने से इंकार कर दिया। अगले दिन गांधीजी को कोर्ट में हाजिर होना था। हजारों किसानों की भीड़ कोर्ट के बाहर जमा थी। गांधीजी के समर्थन में नारे लगाये जा रहे थे। हालात की गंभीरता को देखते हुए मेजिस्ट्रेट ने बिना जमानत के गांधीजी को छोड़ने का आदेश दिया। लेकिन गांधीजी ने कानून के अनुसार सजा की माँग की।

चंपारण के इस गांधी अभियान से अंग्रेज सरकार परेशान हो उठी। सारे भारत का ध्यान अब चंपारण पर था। सरकार ने मजबूर होकर एक जाँच आयोग नियुक्त किया एवं गांधीजी को भी इसका सदस्य बनाया गया। परिणाम सामने था।

कानून बनाकर सभी गलत प्रथाओं को समाप्त कर दिया गया। जमींदार के लाभ के लिए नील की खेती करने वाले किसान अब अपने जमीन के मालिक बने। गांधीजी ने भारत में सत्याग्रह की पहली विजय का शंख फूंका। चम्पारण ही भारत में सत्याग्रह की जन्म स्थली बना। धन्यवाद

सत्याग्रह, 20वीं सदी के प्रारंभ में शुरू की गई अवधारणा महात्मा गांधी ने बुराई के प्रति दृढ़ लेकिन अहिंसक प्रतिरोध को परिभाषित करने के लिए सत्याग्रह का आह्वान किया था। गांधी का सत्याग्रह ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध भारतीय संघर्ष का एक प्रमुख साधन बन गया और तब से इसे अन्य देशों के विरोधी समूहों ने भी अपनाया है।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ सूचियाँ–

1. ए.आर. देसाई, भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि, समाजशास्त्र विभाग, बम्बई विश्वविद्यालय, 1954.
2. ताराचन्द, भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन का इतिहास, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली, 1982.
3. विपिनचन्द्र, कम्यूनिलज्म इन मॉडर्न इंडिया, विकास पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 1984.
4. विपिनचन्द्र, भारत में उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद, अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1986.

5. धनपति पाण्डेय, आधुनिक भारत का इतिहास, मोतीलाल बनारसीदास, पटना, 1995.
6. आचार्य बिमला, भारतीय पुनर्जागरण के सामाजिक प्रभाव, पचौरी प्रकाशन, दिल्ली, 1997.बिजेन्द्रपाल सिंह, भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन, निर्मल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 1998.
7. उर्मिला शर्मा एवं एस. के. शर्मा, भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन, एटलांटिक पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1999.

Cite this Article

'डॉ० सन्नी कुमार,' "गाँधी के स्वाधीनता आन्दोलन में काँग्रेस की भूमिका", Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:2, Issue:10, October 2025.

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/

DOI- 10.70650/rvimj.2025v2i1000014

Published Date- 05 October 2025